सहकारी अधिगम (Co-Operative Learning)

समावेशी कक्षा में जहाँ असंख्य बालक होते हैं, वहाँ बच्चों को सहकारी अधिगम विधि से पढ़ाया जाता है। इस तरह के बच्चे एक दूसरे को सीखने में मदद करते हैं। यह एक ऐसी अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें एक जैसी योग्यता के बालक समूह बनाकर एक ही उद्देश्य को पाने का प्रयास करते हैं। सहकारी शिक्षा बालकों को शैक्षिक योग्यता एवं निपुणता हासिल करने में मदद करती है। जैसे - सुनना, प्रश्न पूछना, मदद करना उत्तर देना, सुझाव देना आदि।

सहकारी अधिगम के उद्देश्य :-

(i) बालक को सहकारी अधिगम की अवस्था में विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने का अवसर मिले।

(ii) विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों के लिए सीखने का उपयुक्त वातावरण तैयार करना।

(iii) बालक को अपना उत्तरदायित्व समझने के लिए प्रोत्साहित करना।

(iv) सहकारी समूह के सदस्यों के मध्य सामाजिक वातावरण को प्रोत्साहित करना।

(v) सक्षम और अक्षम बालकों के मध्य दोस्ताना वातावरण सुनिश्चित करना।

(vi) परस्पर सहयोग और मदद के माध्यम से समस्या निदान की निपुणताओं को विकसित करना।

सहकारी अधिगम के लिए दिशा-निर्देश

एक अध्यापक को सहकारी अधिगम सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए-

(i) अध्यापक को पाठ के उद्देश्यों को स्पष्ट करना चाहिए।

(ii) उसे बालक को समूह में बाँटना चाहिए।

(iii) हर समूह को छोटे आकार में होना चाहिए।

(iv) उसे बालकों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए ताकि एक दूसरे के ज्यादा नजदीक या दूर न रहें।

(v) उसको समूह के हर सदस्य को भूमिका प्रदान करनी चाहिए जैसे नेता एवं सदस्य आदि।

(vi) उसको इनकी भूमिकाओं को बदलते भी रहना चाहिए।

(vii) वह समूह को कार्य दे एवं इसके साथ ही सामग्री भी वितरित करे।

(viii) वह व्यक्तिगत जवाबदेही सुनिश्चित करें।

(ix) वह समूहों एवं समूह के बालकों के मध्य परस्पर वार्तालाप सुनिश्चित करें।

(iv) सहकारी शिक्षण (Co-operative Teaching)

सहकारी शिक्षण का सामान्य अर्थ शिक्षक एवं शिक्षार्थी की सहभागिता से लिया जाता है। यह शिक्षण दोनों ~~प्रकार~~ तरफ से होता है अर्थात् शिक्षक एवं शिक्षार्थी इसलिए यह काफी लाभकारी होता है इस प्रक्रिया में छात्रों द्वारा प्रश्न पूछना श्यामपट्ट पर लेखन करवाकर एवं पृष्ठ पोषण प्रदान करके उनका सहयोग प्राप्त कर रहा है।

सहकारी शिक्षण की विशेषताएं (Characteristics of Co-operative Teaching)

सहकारी शिक्षण की परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर इनकी प्रमुख विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

(i) सहकारी शिक्षण में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दो पक्षों को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है।

(ii) शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों की ही सहभागिता को अनिवार्य माना जाता है।

(iii) इस शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी की सहभागिता होने के कारण यह क्रियाशील बना रहता है, तथा उसे यह अनुभव होता है कि वह शिक्षण प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(iv) यह प्रक्रिया सहयोग एवं सहभागिता पर आधारित है।

(v) सहकारी शिक्षण प्रक्रिया से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावशाली एवं लोकप्रिय रूप में प्रस्तुत की जाती है।

सहकारी शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Co-operative Teaching)

सहकारी शिक्षण वर्तमान समय की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, क्योंकि इस प्रक्रिया से शिक्षण के समस्त पक्ष लाभांवित होते हैं। सहकारी शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(i) शिक्षक एवं छात्र दोनो को क्रियाशील स्थिति में रखना सहकारी शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है।

(ii) छात्रों को स्थायी ज्ञान प्रदान करना सहभागी शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है, क्योंकि इसमें छात्र क्रियाशील रहते

(iii) छात्रों को उनकी महत्वपूर्ण स्थिति का ज्ञान कराने के लिये आवश्यक है।

(iv) सहकारी शिक्षण के माध्यम से कक्षा के नीरस वातावरण को दूर किया जा सकता है।